बहुजनों का बहुजन भारत

व्यवस्था परिवर्तन के लिए समर्पित हिन्दी साप्ताहिक

जन्म दिवस- 15 मार्च, 1934

नई दिल्ली | वर्ष 17 अंक 11 | संपादक-वामन चिंधूजी मेश्राम | 12-17 मार्च, 2018 | प्रकाशन तिथि 18 मार्च, 2018 | पृष्ठ-8,मूल्य-5 रूपये | वार्षिक सहयोग राशि-250 रूपये

बामसेफ के संस्थापक सदस्य मा.कांशीराम साहब का 84वां जन्म-दिवस पर "बहुजनों का बहुजन भारत" साप्ताहिक पत्रिका परिवार की ओर से आप सभी पाठकों को हार्दिक अभिनंदन ...

राजनीति चले न चले, सरकार बने न बने सामाजिक परिवर्तन की गति किसी भी कीमत पर रूकनी नहीं चाहिए। जिनका स्वाभिमान मरा है वे ही गुलाम हैं, इसलिए सिर्फ स्वाभिमानी लोग ही संघर्ष की परिभाषा समझते हैं।" मैं अकेला ही चला था जानिब-ए-मंजिल मगर लोग आते गये, और कारवां आगे बढ़ता गया मा.कांशीराम साहब...

केन्द्र में वर्तमान सरकार भाजपा ईव्हीएम की नाजायज औलाद है-वामन मेश्राम।

बदायूँ/उत्तर प्रदेश

09 मार्च 2018 शुक्रवार को शुक्रवार को बदायूँ के क्रिश्चियन ब्यॉज होम (मिशन कम्पाउंड) पुलिस लाईन चौराहा के पास बामसेफ, भारत मुक्ति मोर्चा एवं राष्ट्रीय किसान मोर्चा का एक संयुक्त विशाल अधिवेशन का आयोजन किया गया था जो अपार सफलता के साथ संपन्न हुआ। उत्तर प्रदेश के बदायूँ में बामसेफ, भारत मुक्ति मोर्चा एवं राष्ट्रीय किसान मोर्चा के एक दिवसीय अधिवेशन में उपस्थित बहुजनों के जन समूह को संबोधित करते हुए कही। इस लोकतांत्रिक देश में घोटाला, मैच फिक्सिंग के साथ-साथ अब ईवीएम फिक्सिंग भी होने लगा है। भाजपा, ईवीएम फिक्सिंग करके ही केन्द्र सहित अन्य राज्यों में अपनी सरकार बना रही है। इसलिए कहा जा सकता है कि भाजपा ईमानदारी से चुनी हुई सरकार नहीं है, बल्कि ईवीएम फिक्सिंग करके बेईमानी से चुनी गयी सरकार है। यदि इस देश में ईवीएम के बजाये बैलेट बॉक्स से चुनाव काराया जाय तो बीजेपी कभी भी सत्ता में नहीं आ सकती है। बीजेपी और चुनाव आयोग को खुली चुनौती है।

इस विशाल कार्यक्रम में हजारों की संख्या में बहुजनों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। विशेष सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक कार्यक्रम का उद्घाटन मा.सर्वेश सिंह पटेल (किसान नेता) ने किया वहीं मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय किसान मोर्चा के राष्ट्रीय प्रभारी मा.राम सुरेश वर्मा मौजूद रहे। इसी के साथ विशाल अधिवेशन की अध्यक्षता बामसेफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष मा. वामन मेश्राम ने किया। अध्यक्षता करते हुए वामन मेश्राम ने कहा कि सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि कथित आजादी के बाद हम जिन मनुवादी व्यवस्था के गुलाम हैं, आज ईवीएम उस ब्राह्मणवादी व्यवस्था को और ज्यादा दृढ़ कर रही है। इसी खतरे से बचने के लिये विश्व के कई विकसित देशों में अमेरिका, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड आदि ने ईवीएम के स्थान पर बैलट पेपर को अपनाया है। अरबों डालर खर्च करने के बाद यहां इन मशीनों को कचरे मे फेंक दिया है, इन्हे असंवैधानिक घोषित कर दिया गया है। लेकिन भारत में इसे ही मान्यता दी जा रही है ताकि ईवीएम फिक्सिंग करके देश की सत्त्सा पर अनियंत्रित कब्जा किया जाय और मूलनिवासी बहुजनों की गुलामी को दृढ़ किया जाय। इसलिए भविष्य में भारत में ईवीएम को रद्द किया जाय और बैलेट पेपर पर ही चुनाव होना चाहिए। इसके लिए भारत मुक्ति मोर्चा लोकसभा चुनाव में ईवीएम के मामले में जागृति अभियान शुरू करने वाला है।

मंडल कमीशन पर विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि 1950 को अडॉ.बाबासाहब अम्बेडकर कानून मंत्री बने। 1943 में उन्होंने एससी के लिए 08>5 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान किया। 21 सितम्बर 1947 को एससी को 12>5 एवं 13 सितम्बर 1950 को एसटी

को 5 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था किया गया था जो 1970 से एससी को 15 और एसटी को 7>5 प्रतिशत आरक्षण चला आ रहा है। ओबीसी का आरक्षण उसका अनुसूचि तैयार न होने के कारण लागू नहीं हुआ, क्योंकि ओबीसी के लोगों ने गाँधीजी को अपना मसीहा माना और गांधीजी ने ओबीसी को साथ में लेकर साईमन कमीशन का विरोध किया। डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर ने संविधान में ओबीसी की सूची निर्धारण के लिए आर्टिकल 340 का प्रावधान किया जिस पर अमल न होने के कारण 1951 में ओबीसी का अनुसूचि तैयार नहीं हुई। तब बाबासाहब ने कानून मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। इसी दबाव में 29 जनवरी 1953 में काका कालेलकर कमीशन का गठन किया गया, जिसमें 2399 ओबीसी जातियों और 837 अतिपिछड़ी जातियों की अनुसूचि तैयार हुई जो 30 मार्च 1955 में रिपोर्ट आयी। इस रिर्पोट को नेहरू ने लागू करने से इंकार कर दिया।

बहुजनों का बहुजन भारत साप्ताहिक अखबार के सभी पाठ. कों को सूचित किया जाता है कि, बहुजनों का बहुजन भारत का पता में परिवर्तन किया गया है। कृपया नये पते पर डाक भेजे।

-नया पता-

बहुजनों का बहुजन भारत
मकान न० 52 ,गली न० 2 फैजरोड, नियर जोशी रोड,
करोलबाग नई दिल्ली 110005
फोन 011>64592623मो० 9415037180
अतः आप सभी से निवेदन है कि, अखबार का मनिऑडर/**SPEED POST**
अथवा कोई भी डाक उपरोक्त पते पर भेजेने का कष्ट करे।
धन्यवाद।

बामसेफ का दो दिवसीय राज्य स्तरीय प्रशिक्षण शिविर सफलतापूर्वक संपन्न।

ब्राह्मणवादी विचारधारा से ब्राह्मणों का बर्चस्व कायम होता है -वी.एल.मातंग (राष्ट्रीय प्रचारक, बामसेफ)

पुणे (महाराष्ट्र)

10/11 मार्च 2018 को गनेश पेठ स्थित क्रांतिजोति माता साबित्रीबाई फुले हाल पूणे में अपार कामयाबी के साथ संपन्न हो गया। देश में व्यवस्था परिवर्तन का आन्दोलन चलानेवाले क्रांतिकारी संगठन बामसेफ का दो दिवसीय राज्य स्तरीय प्रशिक्षण शिविर दिनांक जिसमें महाराष्ट्र राज्य के सभी जिलों से आये हुए मूलनिवासी बहुजन साथियों ने बड़ी संख्या में हिस्सेदारी दिखाई।

इस विशाल राज्य स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन में सबसे पहले क्रांति माता ज्योति सावित्रीबाई फुले को उनके 121वें स्मृति दिवस पर याद किया गया।

प्रभावशाली प्रशिक्षण देते हुए मा.वी.एल.मातंग (राष्ट्रीय प्रचारक, बामसेफ) ने बताया बामसेफ का कार्य करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए जिससे संगठन के नेटवर्क को देश के 6 लाख गांवों एवं 6000 जातियों तक पहुंचा सकते हैं। उन्होंने विस्तार से मिशन को समझाया और कहा कि संगठन के माध्यम से महाराष्ट्र सहित देशभर में जो कार्यक्रम लगाए जाते हैं उनके माध्यम से समतामूलक विचारधारा का तेजी से विस्तार होता है जिससे लोगों के अन्दर अपने महापुरूषों के द्वारा मूलनिवासी बहुजनों के लिए किए गए कार्य और संघर्ष की जानकारी को जनजन पहुँचाने का कार्य तीव्रगति से किया जा सकता है। इसके लिए सबसे अधिक जरूरत मैन पावर की होती है संगठन की इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए ही इन प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरे देश भर में आयोजित

किए जा रहे हैं जिससे ज्यादा -से-ज्यादा जिम्मेदार कार्यकर्ताओं को तैयार किया जा सके। जो आजादी की पूर्वशर्त है।

आगे उन्होंने बताया कि संगठन द्वारा निर्धारित लक्ष्य को निर्धारित समय में हासिल करने के लिए सभी कार्यकर्ताओं को अनुशासन में रहकर काम करना चाहिए क्योंकि बगैर प्रशिक्षण एवं अनुशासन के कोई भी संगठन टिकाऊ नहीं हो सकता है।

राष्ट्रीय किसान मोर्चा के जागरण की वजह से पूरे देश में हुई किसानों में हलचल, किया हक और अधिकारों की मांग।

मुंबई/महाराष्ट्र

11 मार्च को 1993 के बम धमाकों की 25वीं बरसी भी थी। ऐसे में पुलिस के लिए चुनौतियां दोहरी हो गईं। करीब 45 हजार पुलिस कर्मचारी तैनात किए गए। इसके अलावा, एसआरपी और रैपिड ऐक्शन फोर्स को भी अलर्ट पर रखा गया। पुलिस की को. शिश रही कि प्रदर्शन कर रहे किसानों को विधानसभा से दो किलोमीटर पहले ही रोक दिया जाए। इसको देखते हुए वहां भारी पुलिस बंदोबस्त किया गया।महाराष्ट्र के विभिन्न हिस्सों के 35000 से अधिक किसान रविवार को मुंबई पहुँच गए अर्थात देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में करीब 35 हजार किसान अपने खेतों को छोड़कर सड़कों पर हैं। मुंबई से करीब 150 किलोमीटर दूर नासिक से चला किसानों का यह रेला आजाद मैदान में जमा है। यहां से ये किसान विधानसभा घेरने के लिए निकले। बताया जा रहा है कि बच्चों की परीक्षा को देखते हुए किसानों ने 11 बजे के बाद प्रदर्शन का फैसला किया था। किसानों के इस कूच ने जहां प्रदेश की फडणवीस सरकार को सकते में डाल दिया तो वहीं पुलिस प्रशासन भी पगला गया।

प्रदेश सरकार की गलत कृषि नीति के चलते लगातार कर्जदार हो रहे किसान, कर्ज के नीचे दबकर कर कर रहे आत्महत्या एवं वहीं दूसरी तरफ महंगाई किसानों को जीने नही दे रही है। उन्हें भुखमरी में जीने को मजबूर कर दिया गया है इन्ही समस्याओं के निवारण और सराकर की किसान विरोधी नीतियों के विरोध में विभिन्न मांगों को लेकर रविवार को हजारों की संख्या में किसानों ने संसद भवन का घेराव किया। वहीं किसानों के बढ़ते जन आक्रोश को देखकर प्रदेश सरकार के होश उड़ गए हैं। किसानों के बढ़ते आक्रोश को रोकने के लिए राज्य सरकार ने प्रदर्शनकारियों की मांगों को पूरा करने का वादा किया लेकिन किसान सोमवार को विधानसभा के घेराव पर अड़े रहे, किसानों का कहना है कि जब तक उन्हें लिखित में आश्वासन नही दिया जाता तब तक संसद का घेराव किया जाता रहेगा।

मालूम हो कि आंदोलन किसान राज्य सरकार के कर्जमाफी योजना के सही क्रियान्वयन, स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों

को लागू करने, किसान की उपज का सही दाम दिलवाने और ओला वृष्टि से प्रभावित किसानों को उचित मुआवजा देने की मांग कर रहे हैं। साथ ही ये विभिन्न प्रोजेक्टों के लिए भूमि अधिग्रहण का भी विरोध कर रहे हैं। उनका कहना है कि भूमि अधिग्रहण के माध्यम से सरकार किसानों को भूमिहीन व बेरोजगार बना रही है। हम किसी भी कीमत में अपनी जमीन नही देनेवाले हैं। किसान पिछले छह दिन से गरमी के बीच पैदल ही 180 किलोमीटर की दूरी तय कर मुंबई पहुंचे हैं। किसान सभा के अध्यक्ष किशन गुर्जर ने कहा कि अभी किसानों की संख्या 35000से ज्यादा है। सोमवार 20000 से अधिक और किसान हमारे साथ जुड़ जाएंगे। इस बीच राज्य सरकार में जल संसाधन मंत्री गिरीश महाजन ने मुलुंद में किसान नेताओं से मुलाकात की और उनकी ज्यादातर मांगों को पूरा करने का आश्वासन दिया लेकिन किसान मानने को तैयार नहीं हुए उनका कहना है कि उक्त आश्वासन उन्हे लिखित दिया जाय। अगर हमारी मांगे पूरी नहीं होंगी तो हम उग्र आन्दोलन के लिए बाध्य होंगे जिसकी जिम्मेदार प्रदेश सरकार होगी।

दलितों की दुर्दशा कारण और निवारण

निरंतर...

सभी अवतारों ने ऊँच-नीच की बात की है। केवल दो क्षत्रिय राजकुमारों सिद्धार्थ गौतम (बुद्ध) व महावीर ने मानवीय आधार पर समता व भाईचारे की बात की। गौतम बुद्ध विश्व में अकेले हैं जो शिक्षा देते हैं कि कुछ भी मानो परन्तु तर्क की कसौटी पर कसो और अगर वह सही लगे तो तो ही मानो। बुद्ध ने कहा कि मैं तुम्हारा मोक्षदाता नहीं हूँ पर तुम स्वयं अपने दीपक बनो। इसके अतिरिक्त अन्य धर्मो के प्रवर्तकों तथा पैगम्बरों ने कहा कि जो वे बता रहे हैं वही परमात्मा का आदेश है और अंतिम सत्य है।

स्वामी विवेकानंद ने अपनी पुस्तक-भगवान बुद्ध तथा उनका संदेश में लिखा है कि भगवान बुद्ध यद्यपि किसी ईश्वर में विश्वास नहीं करते थे पर वे स्वयं ईश्वर हैं और मेरे ईष्टदेव हैं। अगर वे थोड़ा समझौता करते तो अपने जीवनकाल में समस्त एशिया में ईश्वर की तरह पूजे जाते। विश्व मे अकेले बौद्ध धर्म के अनुयाईयों ने ही रक्त की एक बूंद बहाये बिना केवल पुस्तक हाथ में लेकर धर्म का प्रचार किया। विश्व में कोई सभ्यता नहीं बची जिस पर बौद्ध धर्म का प्रभाव न पड़ा हो। रामायण काल में जहाँ वशिष्ट आर्यो की सभ्यता को आर्यो तक सीमित करने के पक्ष में थे, वहीं विश्वमित्र जो क्षत्रिय थे, असुरों को आर्य सभ्यता में लाने के पक्षधर थे। यही नहीं, उन्होंने असुर राजा शम्बर की कन्या उग्रा से विवाह भी किया जिससे विद्वान पुत्र शुनःशेष पैदा हुआ। उस काल तक ब्राह्मण भी आध्यात्मिक ज्ञान की शिक्षा के लिए राजा जनक, सम्राट प्रवाहण यानि आर्यावर्त आदि क्षत्रिय ज्ञानियों के पास जाते थे।

जब तक ब्राह्मण वर्णाश्रम से चिपके रहे सदैव निर्धन रहे और उसके छोड़ते ही सुख और संपन्नता का जीवन व्यतीत करने लगे। देखें एक ही विद्यालय से निकले कृष्ण व सुदामा थे। सुदामा जवान थे उनकी आर्थिक स्थिति दयनीय थी। ''टूटो तवा और फूटी कठौती'' जब कृष्ण से मिलने पहुँचे तो द्वारपाल ने बताया 'द्वार खड़ो द्विज दुर्बल एक बतातवत आपन नाम सुदामा, पायं उपानह की नहीं सामा।'' सुदामा जवान थे पर श्रम नहीं कर सकते थे। कारण था कि ब्राह्मण थे अतः पत्नी ने भिक्षा के लिए ही प्रेरित किया। जब से ब्राह्मणों ने वर्णाश्रम घर्म छोड़ा, विभिन्न व्यवसायों यहाँ तक जूतों की दुकान, टैनरी आदि व्यवसाय भी अपना लिया। आज हम देखते हैं कि ब्राह्मण हर प्रकार की नौकरियों सिपाही, खलासी और यहाँ तक कि सफाई कर्मचारी के पद भी है और संपन्न हो गये। डाक्टर, अध्यापक व न्यायाधीश का पद जो केवल ब्राह्मणों के लिए आरक्षित था बनियों व कायस्थों ने कब्जा कर रखा है। यह अंग्रेजी शासन के बाद संभव हो सका और शूद्र नेताओं और अछूत नेता डा.बाबासाहब अम्बेडकर के प्रयत्न से यह अवसर शूद्रों व अछूतों को भी उपलब्ध हो सका। इसके बावजूद ब्राह्मणों का धर्म का आतंक मुगल शासन तक कायम रहा। शिवाजी पहले हिन्दू सम्राट हुए और सभी हिन्दू उनका सम्मान करते हैं, पर जब उनके राज्याभिषेक का प्रश्न उठा तो ब्राह्मणों ने कहा कि वे शूद्र हैं और उनका राज्याभिषेक वैदिक रीति से नहीं हो सकता। शिवाजी चाहते तो मुसलमानों की भाँति ब्राह्मणों को चरणों में डाल देते, पर धर्म का आतंक बड़ा था। अतः अस्सी हजार स्वर्ण मुहरों की रिश्वत देकर काशी के ब्राह्मण को बुलाया परन्तु उसने अपने पैर के अंगूठे से शिवाजी का तिलक किया। इसके पश्चात ब्राह्मण पेशवाओं ने महाराष्ट्र तथा हिन्दू धर्म को पतन के गर्त में डाल दिया। करीब सवा दो वर्ष पश्चात ब्रिटिश शासन के समय बीसवीं सदी के प्रारंभ में शिवाजी के वंशज शाहूजी महाराज जो कोल्हापुर रियासत के स्वतंत्र शासक थे, अंग्रेजी शिक्षा दीक्षा प्राप्त की। वे इंग्लैंड भी कई बार गये, वहाँ की जीवन शैली देखी, फिर रियासत में नये स्कूल खोले और मराठों और शूद्र लोगों को शिक्षा दी। कुछ अछूत छात्र आये पर शीध्र छोड़ कर चले गये। शिक्षा समाप्ति पर महीराज ने उन शूद्रों, कुर्मी, यादव आदि को नौकरी पर रखा। अगली मकर सक्रांति पर राजपुरोहित ने यह कहकर मंत्र पढ़ने से इंकार कर दिया कि वे शूद्रों को शिक्षा दे रहे हैं, जो शास्त्र विरूद्ध है। इस पर महाराज ने राजपुरोहितज को बर्खास्त कर दिया, उसकी सारी संपत्ति जब्त कर ली तथा आदेश दिया कि २४ घंटे के अन्दर यह रियासत की सीमा से सपरिवार बाहर चला जाये अन्यथा जेल में डाल दिया जाएगा। जो कार्य शिवाजी धर्म के आतंक के कारण २२५ वर्ष पूर्व करने का सहन न कर सके उनके वंशन कर दिखाया। महाराज ने अनेक सामाजिक कार्य जन सामान्य के उत्थान के लिए किये।

जब तक ब्राह्मण वर्णाश्रम से चिपके रहे सदैव निर्धन रहे और उसके छोड़ते ही सुख और संपन्नता का जीवन व्यतीत करने लगे।

विभिन्न व्यवसायों यहाँ तक जूतों की दुकान, टैनरी आदि व्यवसाय भी अपना लिया। आज हम देखते हैं कि ब्राह्मण हर प्रकार की नौकरियों सिपाही, खलासी और यहाँ तक कि सफाई कर्मचारी के पद भी है और संपन्न हो गये। यह अंग्रेजी शासन के बाद संभव हो सका और शूद्र नेताओं और अछूत नेता डा. बाबासाहब अम्बेडकर के प्रयत्न से यह अवसर शूद्रों व अछूतों को भी उपलब्ध हो सका।

अक्सर लोग धर्म परिवर्तन का विरोध करते हैं। पर कारण पर ध्यान नहीं देते। कुत्ते, बिल्ली तक को लोग प्यार करते हैं पर अछूत को जिसे वे हिन्दू कहते हैं उससे घृणा करते हैं। अभी हाल में राजस्थान में एक तालाब में अछूतों को नहाने से जाटों, राजपूतों आदि ने रोका और मारा-पीटा। वहाँ गाय, भैंस, कुत्ता, बिल्ली जैसे जानवर तो नहा सकते हैं, पर अछूत नहीं। फिर वे क्यों न धर्म परिवर्तन करके मुसलमान या ईसाई बन जाये। तमिलनाडू में मीनाक्षीपुरम में १८ फरवरी, १९८१ को ३०० दलित परिवारों में से २५० परिवारों के १२०० दलितों ने इस्लाम धर्म ग्रहण किया। सारे देश को झकझोर दिया। इस घटना से मालूम हुआ कि जैसे भूकम्प आ गया। सारे शीर्ष हिन्दू नेता वहाँ पहुँच गये। उन्हें हिन्दू रहते जूता पहनकर उनके मुहल्ले में चलने की आज्ञा नहीं दी। ये अच्छा कपड़ा नहीं पहन सकते थे, कंधे पर तौलिया नहीं रख सकते थे, बस में किसी सवर्ण या पिछड़े वर्ग के आते ही सीट छोड़कर उठ जाना पड़ता था। कोई भी उच्च वर्गीय दलितों को अपशब्द कह देता था। पर मुसलमान होने के बाद अच्छे कपड़े व जूते पहन कर कहीं भी वे जा सकते थे, पर किसी भी सवर्ण की हिम्मत नहीं कि कुछ बोल सकें। अब बसों में बैठे रहते हैं पर कोई भी उनसे उठने को नहीं कहता।

उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले में अछूत जब मुसलमान हो कर जुलाहे हो गये तो आज सौ के करीब करोड़पति व हजारों लखपति हैं। हिन्दू (अछूत) रहते हुए यह उन्नति असंभव थी।

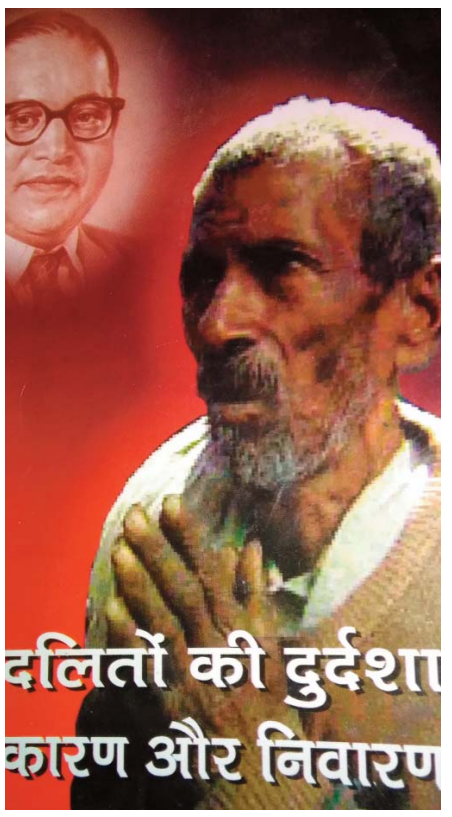

राष्ट्रीयता का उदाहरण संयुक्त राष्ट्र अमेरिका से मिलेगा। १९६७ में जब वहाँ राष्ट्रपति जानसन थे, उन्होंने महससू किया कि जब तक देश के १५ फीसदी नीग्रो, रेड इंडियन आदि को मुख्य धारा में नहीं लाया जायेयगा राष्ट्र सशक्त नहीं हो सकेगा। ये सभी दूसरे देश के थे। राष्ट्रपति के आदेश से इनको इनकी संख्या के अनुपात में अमेरिका के हर क्षेत्र में सरकारी गैर-सरकारी नौकरियों, उद्योग-धंधों, व्यवसाय, पूँजी, बाजार, मीडिया, कला, फिल्म, शिक्षा आदि के क्षेत्रों में १५ फीसदी प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जो ऊपर से नीचे हर स्तर पर डाइवर्सिटी सिस्टम के तहत है। आज अमेरिका के हर क्षेत्र खेल संगीत आदि क्षेत्रों में भी अश्वेत छाये हुए हैं। आज प्रत्येक सरकारी विभाग व निजी क्षेत्र अपने कार्यालय की जरूरतों की पूर्ति के लिए खुले बाजार से खरीद के लिए एक हिस्सा अश्वेत रेड इंडियन आदि व्यवसाय से लेते हैं। विगत वर्ष २००१ अश्वेतों का कुल वार्षिक व्यवसाय चार खरब डालर था जो भारत वर्ष २००२-२००३ के कुल वार्षिक बजट के अड़तालीस गुना ज्यादा था। यह सब राष्ट्र प्रेम के कारण संभव हो सका। यही कार्य चाहे तो देश की बड़ी कंपनियों जैसे टाटा, बिरला, रिलायंस आदि पिछड़ों दलितों के लिए कर सकती है और राष्ट्र के सर्वागीण विकास में सहायता कर सकती है।

शेष अगले अंक में...

संपादकीय...

बहुजन नायक मा. कांशीराम का प्रेरणादायक संघर्ष

भारत के राजनैतिक इतिहास में शायद ही ऐसा कोई शख्स होगा जो बहुजन नायक मा.कांशीराम के नाम से परिचित न हो जिन्होंने अपने संघर्ष से ऐसी मिशाल कायम की है कि उन्होंने देश की राजनीतिक दिशा ही बदल कर रख दी। यूरेशियन लोगों द्वारा डा.बाबासाहब अम्बेडकर की षड्यंत्रपूर्वक की गयी हत्या के कारण जो खाली जगह हो गयी थी, उसको कुछ हद तक वे भरने में कामयाब हुए जिन्होंने संघर्ष की जीवटता से सदियों से सभी मानवीय हक एवं अधिकारों से वंचित मूलनिवासी बहुजन समाज को जागृति के माध्यम से संविधान द्वारा प्रदत्त हक एवं अधिकारों के प्रति जानकार बनाया और उन्होंने वोट की कीमत क्या होती है इससे बहुजन समाज को जागृत करने का काम किया। डा. बाबासाहब अम्बेडकर द्वारा लिखित महत्वपूर्ण पुस्तक **"एनीहिलेशन ऑफ कास्ट"** का अध्ययन करके भारत में स्थापित गैरबराबरी क्रमिक असमानता एवं स्त्रीदासता पर आधारित व्यवस्था की पहचान की।

गहन अध्ययन के बाद मा. कांशीराम को इस बात का एहसास हुआ कि देश के 85 प्रतिशत मूलनिवासी बहुजन समाज में संवैधानिक अधिकारों की बदौलत पैदा हुए बुद्धिजीवी वर्ग को अपनी सामाजिक जिम्मेदारी का एहसास ही नहीं है। उन्होंने बाबा साहब का गहन अध्ययन करने के बाद यह भी एहसास किया कि संविधान निर्माता डा.बाबासाहब अम्बेडकर ने शिक्षा, सरकारी नौकरी तथा राजनैतिक में हिस्सेदारी की व्यवस्था संविधान में की जो उदरपूर्ति का साधन मात्र नहीं है। डा.बाबासाहब अम्बेडकर ने प्रतिनिधित्व की, व्यवस्था को आधार बनाकर देश के मूलनिवासी बहुजन समाज (एससी, एसटी, ओबीसी एवं धर्मपरिवर्तित अल्पसंख्यकों) पर यूरेशियन लोगों द्वारा थोपी जा रही गुलामी से सम्पूर्ण रूप से आजाद होने के मकसद से इसकी व्यवस्था की। परन्तु बहुजन समाज में संवैधानिक अधिकारों की बदौलत निर्मित हुआ बुद्धिजीवी वर्ग अपने सामाजिक जिम्मेदारियों से विमुख हो चुका है अर्थात वह अल्पसंतुष्ट होकर अपने दुश्मनों (यूरेशियन) का पिछलग्गू बनकर काम करने में अपना गौरव समझता है। इतना सब विश्लेषण करने के बाद मा.कांशीराम ने यह दृढ़ निश्चय किया कि कोई कुछ करे या न करे लेकिन मैं बाबासाहब अम्बेडकर के अधूरे मिशन को मंजिल तक पहुंचाने के लिए अपनी पूरी जिन्दगी लगा दूँगा, क्योंकि बुद्धिजीवी पर डा.बाबासाहब अम्बेडकर ने यह आरोप लगाया था कि मुझे पढ़े लिखे लोगों ने धोखा दिया ऐसा आरोप लगाया था। क्योंकि इस बुद्धिजीवी वर्ग पर बहुतायत में स्वार्थी, लालची अल्पसंतुष्ट होने का आरोप लगाया था।

बहुजन नायक मा.कांशीराम ने उसी बुद्धिजीवी वर्ग को डा.बाबासाहब के आरोप से मुक्त करके इसी वर्ग के माध्यम से देश के बहुजन समाज को शिक्षित, संगठित करके मनुवाद के खिलाफ संघर्ष करने के लिए तैयार किया। जैसा बाबासाहब डा.अम्बेडकर चाहते थे कि देश का मूलनिवासी बहुजन समाज (एससी, एसटी, ओबीसी एवं धर्मपरिवर्तित अल्पसंख्यक) इस देश की शासन करती जमात बने। बहुजन नायक मा.कांशीराम ने बाबासाहब के मिशन को आगे बढ़ाने का काम किया, काम ही नहीं किया बल्कि उनकी विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाकर बहुजन समाज में राजनैतिक चेतना का संचार किया जिसको उन्होंने देश के सबसे बड़े सूबे में साकार करके भी दिखाया। आज उन्हीं के संघर्षों से प्रेरणा लेकर बामसेफ, भारत मुक्ति मोर्चा एवं सभी ऑफसूट संगठन, समतावादी मूलनिवासी नायकों के कारवां को मूलनिवासी योद्धा वामन मेश्राम के कुशल नेतृत्व में निर्धारित लक्ष्य की ओर तेजी से बढ़ रहा है जिसका असर आज सम्पूर्ण देश में दिखाई दे रहा है जिसकी गति को अब कोई भी शक्ति नहीं रोक सकती है। आइटी हम सभी मूलनिवासी बहुजन मिलकर बहुजन नायक मान्यवर कांशीराम की बहुजन संकल्पना को साकार करें।

!! जय मूलनिवासी !!

मा.कांशीराम ने दोस्त और दुश्मन की पहचान करायी

'कांशीराम' जी का जन्म 15 मार्च, 1934 को पंजाब के रोपड़ जिले के ख्वासपुर गांव में हुआ था। उनके माता - पिता का नाम बिशन कौर और हरी सिंह था। उनका जन्म एक बहुजन (रैदसिया, सिख समुदाय) परिवार में हुआ था। कांशीराम जी ने स्नातक की डिग्री रोपड़ राजकीय कालेज, पंजाब विश्वविद्यालय से प्राप्त की। उन्होंने डीआरडीओ में नौकरी प्रारंभ की। नौकरी के दौरान के दौरान जातिगत भेदभाव से आहत होकर कांशीराम जी डॉक्टर भीमराव अंबेडकर, जोतिबा फुले और पेरियार के दर्शन को गहनता से पढ़कर बहुजनों को एकजुट करने में जुटे। कांशीराम एक प्रखर भारतीय राजनीतिज्ञ थे।

उन्होंने राजनीतिक पार्टी, बहुजन समाज पार्टी की स्थापना किया। उन्हें उत्तर प्रदेश में इटावा से लोकसभा के सदस्य के रूप में भी निर्वाचित हुए। एक लेखक के रूप में कांशीराम ने दो पुस्तकें लिखी 'एन एरा ऑफ द स्टूजस (चमचा युग) एवं न्यू होप'। उन्होंने पे बैक टू सोसाइटी के सिद्धांत के तहत अनुसूचित जाति कर्मचारियों को अपने वेतन का 10वां हिस्सा समाज को लौटाने का आहवान किया। बहुजनों की राजनीतिक ताकत तैयार करने में बामसेफ काफी मददगार साबित हुआ। जो आज उनकी मंशा के अनुसार अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है।

9 अक्टूबर 2006 को कांशीराम को नई दिल्ली में विषम परिस्थिति में दिल का दौरा पड़ने से उनका निधन हो गया। वे एक भारतीय राजनीतिज्ञ और समाज सुधारक थे। उन्होंने भारतीय वर्ण व्यवस्था में बहुजनों के राजनीतिक एकीकरण तथा उत्थान के लिए कार्य किया। शोषित समाज में निष्क्रिय रही राजनीतिक चेतना को जागृत करने के लिए उन्हें सदैव याद किया जाएगा।

06 दिसम्बर 1956 में डा.बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर के महापरिनिर्वाण के बाद मूलनिवासी बहुजन समाज में नेतृत्व के संदर्भ में शून्यवत दशा का निर्माण हो चुका था। डा.बाबासाहब अम्बेडकर के साथ उनके आन्दोलन में काम करनेवाले लोगों में बाबासाहब ने अपने जीते जी यह अनुभव किया था कि उनकी (बाबा साहब) की मृत्यु के पश्चात उनके मिशन के कारवां (आन्दोलन) को उसके मंजिल तक पहुँचाने का जज्बा नहीं दिख रहा है।

डा.बाबासाहब अम्बेडकर ने 18 मार्च 1956 में बेहद दुःखी भाव से कहा कि "समाज के पढ़े-लिखे वर्ग ने मुझे धोखा दिया, मैं चाहता था कि समाज का पढ़ा-लिखा वर्ग अपने समाज की सेवा और मार्गदर्शन करेगा, लेकिन यह पढ़ा-लिखा वर्ग जानवरों की भाँति अपना पेट पालने में ही मस्त और व्यस्त हो चुका है।" यही कारण रहा कि डा.बाबासाहब अम्बेडकर के महापरिनिर्वाण के बाद समाज में नेतृत्व के स्थान पर शून्य पैदा हो गया था। लेकिन सन् 1965 में पूना में सैन्य विभाग में डा.बाबासाहब अम्बेडकर के जन्म दिन पर सार्वजनिक अवकाश को लेकर विवाद हुआ। उस विवाद की जड़ में निडर दीनाभाना नाम के एक चतुर्थवर्ग के कर्मचारी थे। दीनाभाना उस संस्थान में कार्यरत चतुर्थवर्गीय कर्मचारियों के संगठन के अध्यक्ष थे। उस सरकारी सैन्य संस्थान में वार्षिक सार्वजनिक छुट्टियों की लिस्ट जारी करने से पूर्व कर्मचारी संगठन के अध्यक्षों से संस्तुति लेनी होती है। उस छुट्टियों की लिस्ट में डा.बाबासाहब अम्बेडकर के जन्मदिन की छुट्टी नहीं थी, जिस पर दीनाभाना जी ने आपत्ति जताते हुए छुट्टियों के लिस्ट पर साइन करने से मना कर दिया। इसी बात को लेकर संस्थान के निदेशक (जो ब्राह्मण थे) उनसे विवाद हुआ। उसी विवाद ने उसी संस्थान में कार्यरत कांशीराम को डा.बाबासाहब अम्बेडकर के बारे में अध्ययन करने की प्रेरणा दी।

कांशीराम ने डा.बाबासाहब अम्बेडकर के बारे में गहन अध्ययन किया, तब उन्हें पता चला कि मूलनिवासी बहुजन समाज को जो भी संवैधानिक अवसर प्राप्त हुए हैं वो सब डा.बाबासाहब अम्बेडकर की ही जीवन भर के कठिन संघर्षों के परिणाम स्वरूप हैं। बाबासाहब का अध्ययन करने के पश्चात मान्यवर कांशीराम साहब को भी इस बात का एहसास हुआ कि समाज के बुद्धिजीवी वर्ग को अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों का एहसास नहीं है। उन्होंने यह भी पाया कि डा. बाबासाहब ने शिक्षा, सरकारी तथा राजनीतिक प्रतिनिधित्व की जो व्यवस्था संविधान में की है, वह केवल पेट भरने के लिए नहीं है। बल्कि डा.बाबासाहब अम्बेडकर ने प्रतिनिधित्व के इस व्यवस्था को माध्यम बनाकर मूलनिवासी समाज को देश का शासक वर्ग बनाना चाहते थे और समाज को हजारों साल से चली आ रही गुलामी से आजाद कराना चाहते थे। लेकिन समाज का बुद्धिजीवी वर्ग अल्पसंतुष्ट होकर अपने सामाजिक दुश्मन अर्थात ब्राह्मणों की ही व्यवस्था को मजबूत करने में अपना गौरव समझ रहा है।

तत्पश्चात मान्यवर कांशीराम साहब ने दृढ़निश्चय किया कि कोई कुछ करे या न करे, लेकिन मैं डा.बाबासाहब अम्बेडकर के अधूरे मिशन को उसकी मंजिल तक पहुंचाने के लिए अपनी सारी जिन्दगी लगाऊँगा। केवल इतना ही नहीं बल्कि बाबासाहब ने समाज के जिस बुद्धिजीवी वर्ग पर स्वार्थी, लालची, अल्पसंतुष्ट तथा धोखेबाजी का आरोप लगाया है, मैं उस बुद्धिजीवी वर्ग को भी बाबासाहब के आरोप से मुक्त करके उसके जरिये समाज को शिक्षित, आन्दोलित और संगठित करने का काम करूंगा और जैसा कि डा.बाबासाहब अम्बेडकर चाहते थे कि मूलनिवासी बहुजन समाज इस देश का शासक वर्ग बने, तो उनके इच्छानुरूप समाज को शासक वर्ग बनायेंगे।

जब उन्होंने ठान लिया कि डा. बाबासाहब के मिशन को पूरा करना है तो उन्होंने फिर महसूस किया कि यह काम मेरे अकेले के वश की बात नहीं है। उन्होंने महसूस किया कि इस काम को पूरा करने के लिए एक ऐसे संगठन की जरूरत है, जिसमें ऐसे लोग हों जो सिर्फ मजलूम बनाये गये समाज से हों, ऐसे लोग हो जिनके पास आन्दोलन चलाने के लिए आवश्यक पांच चीजें हों, जैसे कि बुद्धि, पैसा, हुनर समय और श्रम। उसके अलावा मान्यवर साहब ने उस समय के परिपेक्ष्य में अपने समाज की मनोविज्ञान या मानसिकता का भी जब बारीकी से अध्ययन और विश्लेषण किया तो उन्होंने इस बात को भी महसूस किया कि हमारा समाज मौजूदा हाल में शासन जमात नहीं बन सकता। जब तक हमारा समाज शासन करने वाली जमात नहीं बन सकता तब तक हमारा समाज ब्राह्मणवादी गुलामी से मुक्त नहीं हो सकता है, और जब तक समाज ब्राह्मणवाद की गुलामी से मुक्त नहीं होगा तब तक डा.बाबासाहब अम्बेडकर सहित उन तमाम मूलनिवासी महापुरूषों का मिशन अधूरा ही रहेगा जिसके लिए उन्होंने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। मान्यवर साहब का चिन्तन बढ़ता गया।

शेष अगले अंक में...

बामसेफ संचालित वैचारिक क्रांति के आन्दोलन में नींव के पत्थर मा.दीनाभानाजी

अंक ०६ का शेष अंश-

दीनाभानाजी सीना तानकर आगे आये और गर्व से कहने लगे कि ''मुझे तो नौकरी भी चाहिए और छुट्टी भी'' दीना के प्रति यह बात को लेकर ब्राह्मणवादी अधिकारियों को बहुत चिढ़ से उन्होंने दीनाभाना को नौकरी से निलंबित कर दिया। इसकी चर्चा उन्होंने माननीय डी.के.खापर्डे साहब से की और उन्होंने दीनाभना को हिम्मत बधाई और कहा कि आओ कांशीरामजी भी एक कर्मचारी हैं उससे बात कर लेते हैं तो दीनाभाना ने कहा कि छोड़ों वह तो कोई पंजाब का खूबसूरत जाट दिखाई देता है, वे अनुसूचित जाति के नहीं हो सकते। एक दिन कांशीरामजी को पंजाब से पत्र आया, पत्र पर लिखा था 'कांशीराम रमदासिया।' तब पता चला कि कांशीराम तो अनुसूचित जाति से हैं। कांशीराम को तो बाबासाहब अम्बेडकर जी के बारे में कुछ भी पता नहीं था। पहली बार दीनाभाना जी के कहने पर मा.खापर्डे साहब ने कांशीराम को बाबासाहब डा.अम्बेडकर द्वारा लिखित पुस्तक (Anihiliation of cast) **'जात-पात का बीज नाश'** नामक पुस्तक पढ़ने के लिए दी।

इंस्टीच्यूट के ब्राह्मणवादी अधिकारियों ने ठान रखा था कि मूलनिवासी बहुजनों के महापुरूषों के जन्मदिन की छुट्टी हमने घोषित नहीं करना है, तो दीनाभाना जी १९६४ से ट्रेड यूनियन का नेता होने के नाते 'कामगार कल्याण समिति' का प्रतिनिधि चुना गया और वे वहाँ के मजदूरों के शिकायतें सुनते थे। वे समिति की सभी बैठकों में जाते थे। १९६५ में जब १६ छुट्टियां निर्धारित की गयी। उसमें दीवाली, दशहरा, होली, रामनवमी, शिवरात्रि आदि की छुट्टियाँ दी गई, लेकिन उदस सूची में बाबासाहब डा.अम्बेडकर, महामानव बुद्ध, छत्रपति शिवाजी महाराज, छत्रपति शाहूजी महाराज और अन्य मूलनिवासी महापुरूषों आदि की छुट्टियाँ उस सूची में नहीं थी। दीनाभाना ने सहमति पत्र पर हस्ताक्षर करने से इंकार कर दिया और तर्क दिया कि इस संस्था में सभी धर्मो और सम्प्रदायों के कर्मचारी हैं उनके सभी महापुरूषों की छुट्टियाँ इस सूची में चाहिए। दीनाभाना जी की प्रतिक्रिया पर वर्कर्स कमेटी के ब्राह्मण चेयरमैन सी रामचंद्रन ने धमकी भरे अंदाज में दीनाभाना जी को कहा कि ''तुम तो राजस्थान के हो तुमने इन छुट्टियाँ से क्या लेना-देना?'' उनका उत्तर था कि वे महाराष्ट्र में रहते हैं तो महाराष्ट्र की बात ही करेंगे। जब दीनाभाना जी ने सहमति पत्र पर हस्ताक्षर नहीं किए तो चेयरमैन ने गुस्से में कहा, कि दीनाभाना आजकल तू बहुत बोलने लगा है, मुझे कायदे-कानून सिखाता है। यह कहकर वह बाहर चला गया। जब बाहर गये तो सारे कर्मचारी कहने लगे कि बड़े जोर-शोर से बोल रहा था, क्या बात है? मैंने उत्तर दिया, ब्राह्मण लोग हैं, उनको दूसरों की खुशियाँ से कोई मतलब नहीं। ऐसा ही मै। बोल रहा था तो मुझे बताया गया रामचन्द्रन साहन ने तुम्हारी शिकायत निरीक्षक को दी है। प्रबंधन के इस व्यवहार से माननीय खापर्डे साहब दुःखी हुए और उन्होंने मेरे साथ शपथ ली कि जो हमारे महापुरूषों के जन्म दिवस पर छुट्टियाँ नहीं करवा देते तब तक हम आराम से नहीं बैठेंगे। तब माननीय खापर्डे साहब सोंचने लगे कि अब क्या करना चाहिए? तभी उन्होंने बामसेफ (BAMCEF) नाम के संगठन की बीजारोपन सन् १९७३ को किया। बामसेफ (BAMCEF) का अर्थ है बैकवर्ड (एससी, एसटी, कम्युनिटिज एम्पलाईज फैडरेशन। इस संख्या में ८५ प्रतिशत जनसंख्या वाले पढ़े-लिखे सरकारी कर्मचारियों को सम्मिलित किया गया और पूरे देश में व्यवस्था परिवर्तन के वैचारिक क्रांति की फुले-अम्बेडकर विचारधारा पर आधारित शुरू किया गया।

बामसेफ ने अपना उद्देश्य निर्धारित किया कि हम व्यवस्था परिवर्तन करना चाहते हैं और व्यवस्था परिवर्तन कौन करे? ये जिम्मेदारी मूलनिवासी बहुजनों के सरकारी कर्मचारियों की लगाई गई। इन्हें बताया गया कि कर्मचारी वर्ग के ऊपर समाज का ऋण है और वह वर्ग समाज का ऋणी है, इन्हें ऋण मुक्त होना चाहिए। (Pay back to the socity) समाज को वापिस देने की भावना पैदाकरने की शुरूआत की गई।

बामसेफ, भारत देश तक ही नहीं विदेशों में भी फैली हुई है। सामाजिक और भौगोलिक नेटवर्किंग के माध्यम से हम फुले-अम्बेडकर की विचारधारा को २००६ तक ६ लाख गांव तक पहुँचाना है।

मैंने महससू किया कि ''बामसेफ रजक जयंती वर्ष-२००३ में बहुत बड़े पैमाने पर मनाया जा रहा है और बामसेफ रूपी विशाल भवन का निर्माण हो रहा है और इस भवन को बनाते समय नींव खोदी गई थी और इस नींव के अंदर जो पत्थर लगाये गए थे वह पत्थर तो आज दिखाई नहीं देते, बल्कि इस भवन की नींव तले दब गए हैं और उनको कोई याद भी नहीं करता तो मुझे याद आया कि उनकी याद दिलाई जाए। मेरा सीधा ध्यान दीनाभाना जी की तरफ गया जिनको मैं बामसेफ की नींव का पत्थर मानता हूँ।

एक और बात ध्यान में आयी कि दीनाभानाजी कहते हैं कि मैं कभी स्कूल नहीं गया। मैं तो सीआईएमई, पूणे में आठ साल तक झाडू लगाता रहा। हालांकि मैं वहाँ सफाईकर्मी नहीं था। मजदूर था, भंगी जाति से होने की वजह से ऐसा मुझसे करवाया जाता था। लेकिन १९४४ को दिल्ली में बाबासाहब डा. अम्बेडकर का जो भाषण सुना था, उनके भाषण का दीनाभानाजी पर गहरा प्रभाव पड़ा और उनकी इसी संस्था में इंस्पेक्टर के तौर पर पदोन्नित हुई। बाबासाहब डा. अम्बेडकर के प्रभावी भाषण ने उन्हें सफाईकर्मी से इस्पेक्टर बना दिया। उन्होंने बताया कि मैं इंस्पेक्टर बनने के बाद राजस्थान के बागावास अपने गांव में छुट्टी पर गया तो उन्हीं दिनों भंगी जाति के लोगों की एक सभा थी, जहाँ मुझे बुलाया गया और सभा में मुझे कुछ बोलने के लिए कहा गया। जब मैंने बोलना शुरू किया तो मेरा ध्यान सीधा ठाकुर राजा के विशाल भवन की ओर गया और याद आ गया, मैंने कहा कि यह ठाकुर राजा ने मेरे पिता को अपने घर बुलाकर आदेश दिया था कि तू भैस-गाय नहीं पाल सकता, तुम्हें सुअर पालना चाहिए और उस भाषण में मैंने उस ठाकुर राजा को थोड़ा गाली भी निकाला और कहा कि बाबासाहब डा.अम्बेडकरजी के निरंतर के संघर्ष के कारण आज मैं इंस्पेक्टर बन गया हूँ और मेरी सारी बातें वह ठाकुर राजा जो बूढ़ा हो गया था, बल्कि ध्यान से सुन रहा था। सायंकाल ठाकुर राजा को संदेश मेरे घर आया कि मुझे ठाकुर ने अपने निवास स्थान पर बुलाया है। मैं डरा-डरा-सा उस ठाकुर के घर गया। ठाकुर ने कहा बैठ जाओ, मैं हैरान हो गया और उसने कहा तुम्हें बचपन की ऐसी बातें अभी भी याद हैं, मैंने उत्तर दिया, ठाकुर राजा मुझे बहुत कुछ याद है और ठाकुर ने मुझे चाय पिलाकर भेजा। तभी मैंने मन में क हा वाह रे मेरे बाबासाहब तेरा करिश्मा, तूने मुझे जानवर से इंसान बना दिया।

जब मैं बड़े सादगी भरे अंदाज वाले दीनाभाना जी को देखता हूँ तो मेरा ध्यान डा.शामलालजी की ओर गया जो राजस्थान की भंगी जाति से हैं वे भी अपने जीवन में बहुत बड़ी मेहनत करके, उच्च शिक्षा हासिल करके जोधपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति बने और उन्होंने बहुत शोध कार्य किया और उन्होंने अपनी आत्म कथा लिखी (Untold stroy of a Bhaujan vice chancellor) ''एक भंगी उप-कुलपति की अनकही कहानी'' ये आत्म कथा मूलनिवासी बहुजनों के बुद्धिजीवि वर्ग के लिए प्रेरण स्श्रोत है। डा.शामलालजी ने बड़ी मेहनत और सतत संघर्ष से पद और प्रतिष्ठा हासिल की। दूसरी ओरराजस्थान की भंगी जाति के दीनाभाना जी जिन्होंने अपने जीवन की सुख-सुविधाओं की परवाह न करते हुए समाज की पद और प्रतिष्ठा को पहचान में रखते हुए एक महान क्रांतिकारी संगठन बामसेफ का निर्माण करने में कारणीभूत बने। खुशी की बात है कि दीनाभानाजी जब दिसंबर १९९९ के १६वें राष्ट्रीय अधिवेशन (पटना) में आये, तब से वे बामसेफ में बहुत सक्रिय रहें।

मैंने उन्हें प्रश्न किया कि आप

बामसेफ को देखकर कैसा महसूस करते हैं तो उनका जोशीला उत्तर था कि बामसेफ के इस विस्तार को देखकर मझे अच्छा लगता है कि बेहद खुशी होती है, कि जिस पौधे को हमने लगाया, उस पौधे को अब फल-फूल लगने शुरू हो गए हैं और अम्बेडकरी विचारधारा की लहर पूरे देश में फैल रही है।

अब मूलनिवासी बहुजनों के इसआन्दोलन को ब्राह्मणवादी ताकतें किसी श्भी हालत में परास्त नहीं कर सकती। ब्राह्मणवाद की जड़े अब देश में कमजोर होती हुई दिखाई दे रही है। और मैं यकीन और विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि बामसेफ ने अपने आपमें जो लक्ष्य निर्धारित किया हुआ है, वह लक्ष्य आनेवाले समय में निश्चित रूप से डा.बाबासाहब अम्बेडकर के सपनों का मूलनिवासी भारत राष्ट्र का निर्माण कार्य प्रारंभ होगा और राष्ट्र की सभी समस्याओं का समाधान करने लायक बन जायेंगे। इस वजह विश्व की सबसे बड़ी विचार क्रांति इतिहास के पन्नों में आंकित होगी ऐसा मुझे यकीन और विश्वास है। इसलिए भारत के मूलनिवासियों को अपना सर्वस्व राष्ट्र को समर्पित करने के लिए हमेशा पहल करते रहना चाहिए।

मैं अपने साथियों को यह कहना चाहता हूँ कि यदि दीनाभानाजी न होते तो शायद बामसेफ का निर्माण न होता और यदि बामसेफ का निर्माण न होता तो फुले-अम्बेडकरी विचारधारा पूरे देश में न फैलती।

अंत में इस नींव के पत्थर दिवंगत मा.दीनाभाना जी जो इस आन्दोलन के कारणीभूत बने उनको मेरा जय मूलनिवासी!

कर्नाटक राज्य चुनाव आयोग की धमकी

ईवीएम में छेड़छाड़ गलत, साबित ना कर पाने पर होगी 06 माह की जेल

गोरखपुर/उत्तर प्रदेश

इलाहाबाद फुलपुर लोकसभा क्षेत्र की तर्ज पर गोरखपुर लोकसभा क्षेत्र में भी बहुजन मुक्ति पार्टी प्रत्याशी मा.अवधेश निषाद के समर्थन मे भारत मुक्ति मोर्चा के नेतृत्व में एक बड़ी जनसभा का आयोजन किया गया, जिसमें इलाहाबाद की तरह ही हजारों की संख्या में एससी, एसटी, ओबीसी एवं धर्म परिवर्तित लोगों की उपस्थिति रही।

इस कार्यक्रम में सभी वक्ताओं ने उत्तर प्रदेश की सत्ता में काबिज भारतीय जनता पार्टी के 10 महीनों की कार्यकाल की जमकर आलोचना की और कहा कि इस सरकार ने ईवीएम घोटाले के माध्यम से सत्ता हासिल की है जिसे किसी भी कीमत में जनमत की सरकार नही कहा जा सकता है। यह सरकार ईवीएम की नाजायज पैदाइश है। इस सरकार के कार्यकाल मे किसानों, मजदूरों की हित की बजाय केवल पूँजीपतियों के अनुकूल माहौल का निर्माण किया जा रहा है। आज महिलाओं की तो सबसे बुरी हालत है। वे कहीं भी सुरक्षित नही हैं। जब आम आदमी सुरक्षित नही है तो महिलाओं की गिनती ही क्या है? क्योंकि प्रदेश में योगी सरकार के सत्ता में आते ही कानून नाम की कोई चीज नही रह गई है। इस जनसभा की अध्यक्षता करते हुए मा.उमाशंकर सहनी (राष्ट्रीय महासचिव बीएमपी) ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश में अराजकता का शासन आ गया है जिसने लोगों का जीना हराम कर दिया है। योगी सरकार के दस माह के शासन काल में ही जनता को अच्छे दिनों का आभास हो गया है। आज आम आदमी के उपयोग की कोई ऐसी वस्तु नही हैं जिसके दाम न बढ़े हों यानि भाजपा शासन में महँगाई चरम सीमा पार कर चुकी है। वहीं मा.सुखदेव निषाद (प्रदेश अध्यक्ष, भारत मुक्ति मोर्चा) ने कहा कि आज प्रदेश में कानून का राज नही बल्कि

अपराध का शासन चल रहा है जहां कानून व्यवस्था सुधारने के नाम पर केवल एससी, एसटी, ओबीसी एवं धर्म परिवर्तित लोगों का फर्जी एनकाउन्टर के माध्यम से नरसंहार किया जा रहा है। मूलनिवासी नरसंहार की अब तक 1142 फर्जी एनकाउन्टर अंजाम दिए जा चुके हैं। यह मनुस्मृति का ही परिवर्तित स्वरूप है। ऐसी संविधान विरोधी सरकारों को सत्ता मे रहने का कोई अधिकार नही है। इन मनुवादियों को सबक सिखाने का समय आ गया है। इसके लिए आप सभी को आजादी के आन्दोलन का समर्थन करने वाली बहुजन मुक्ति पार्टी का साथ देने के लिए चारपाई वाली बटन दबाकर बीएमपी के प्रत्याशी मा.अवधेश निषाद को विजयी बनाएं। जिससे देश में व्यवस्था परिवर्तन की जंग को मजबूत किया जा सके। इस सभा को मा.रामधारी दिनकर (प्रदेश अध्यक्ष, बीएमपी) ने भी संबोधित किया।

धर्म परिवर्तन तो हुआ, लेकिन विचार परिवर्तन नहीं हुआ-वामन मेश्राम

पिछले अंक का शेष...

बाबासाहब अम्बेडकर भारत को बौद्धमय बनाना चाहते थे, इसलिए जिन लोगों को वे बौद्धमय बनाना चाहते थे, उनकी सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, राजनीतिक आदि समस्याओं को उन्होंने राष्ट्रीय एजेण्डा में रखा। भारत को बौद्धमय बनाने का जो कार्यक्रम बाबासाहब ने बनाया था, वह तृसुत्री कार्यक्रम था। बाबासाहब कहते हैं, ''बौद्ध धर्म को यदि पूरे दुनिया तक पहुँचाना है तो तीन बातों पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। पहली बात 'बाईबल' की तरह बौद्ध धर्म का एक प्रमाणभूत ग्रंथ तैयार करना। दूसरी बात, भिक्खु संघ के संगठन, नीति-नियम तथा कार्यप्रणाली मे आमुलाग्र परिवर्तन लाना और तीसरी महत्वपूर्ण बात, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक विश्व बौद्ध सेवा संघ का गठन करना।''

उपरोक्त तृसुत्री कार्यक्रम में पहला, बाईबल सदृश्य बौद्ध धर्म का एक प्रमाणभूत ग्रंथ बनाने का काम बाबासाहब ने स्वयं ाही कर रखा है। 'बुद्ध और उनका धम्म'' इस ग्रंथ के माध्यम से उन्होंने हम एक 'बुद्धिस्ट बाईबल' दिया। ब्राह्मणवाद के प्रत्येक तर्क का खंडन करनेवाला विचार और तर्क 'बुद्ध और उनका धम्म' इस ग्रंथ में उपलब्ध है। इस ग्रंथ को पढ़ने का तरीका है। यह ग्रंथ अगर उपासक बनकर पढ़ोगे तो कुछ पल्ला पड़ने वाला नहीं है। अगर थोड़ा पल्ले पड़ता भी है तो बुद्ध के आगे नतमस्तक होते समय सारा नीचे चला जाएगा। बाबासाहब डा.अम्बेडकर द्वारा लिखित ' बुद्ध और उनका धम्म'' यह ग्रंथ भारत को बौद्धमय बनाने की ही रणनीति का हिस्सा था। इस ग्रंथ का पालन करना, यह बौद्धमय बनने की ही रणनीति का हिस्सा था। इस ग्रंथ का पालन करना, यह बौद्धमय बनने की पूर्वशर्त है। यह पूर्व शर्त पूरी किए बगैर भारत को बौद्धमय बनाने का लक्ष्य पूरा नहीं हो सकता।

दूसरी महत्वपूर्ण बात, भिक्खु संघ के संगठन, नीति-नियम एवं कार्य प्रणाली में बदालव लाने का काम केवल बाबासाहब ही कर सकत थे। क्योंकि यह काम करने के लिए जिस प्रकार एथोरिटी चाहिए, जिस स्तर का ऊँचा स्थान (स्टेटस्), जिस स्तर का व्यक्ति चाहिए, वह केवल बाबासाहब डा.अम्बेडकर ही हो सकते थे।

भिक्खु संघ पर प्रकाश डालते हुए बाबासाहब लिखते हैं, ''एक हिन्दू संन्यासी और भिक्खु मे जमीन आसमान का अंतर होता है। हिन्दू संन्यासी को संसार से कोई वास्ता नहीं होता। संसार की दृष्टि में वह मर जाता है। एक भिक्खु का हर एक दृष्टि से संसार के साथ नाता होता है। वस्तुस्थिति ऐसी होने से एक सवाल यह खड़ा होता है कि किस उद्देश्य को सामने रख कर बुद्ध ने भिक्खु संघ का निर्माण करने की कल्पना की? भिक्खुओं का एक अलग समाज स्थापित करने की क्या आवश्यकता थी? इसका एक उद्देश्य यह था कि बौद्ध सिद्धान्तों में संग्रहित आदर्शो के अनुसार जीवन व्यतीत करनेवाले लोगों का एक ऐसा समाज बनाया जाए जो उपासकों के लिए एक नमूने के रूप में काम आये। बुद्ध को इस बात का पता था कि जन सामान्य को बुद्ध का साक्षात्कार करना संभन नहीं था। परन्तु इसी के साथ वे यह भी चाहते थे कि सामान्य जन इस आदर्शो को जाने और यह भी कि उनके समक्ष इन आदर्शो पर अमल करने के लिए बचनबद्ध समाज का उदाहरण रखा जाए। इसलिए उन्होंने भिक्खु संघ का निर्माण किया और उसे विनय के नियमों से बांध दिया। परन्तु इसी के साथ उनके मन में अन्य भी उद्देश्य थे जिनके कारण उन्होंने संघ की स्थापना करने का विचार किया। उनमें से एक यह था कि उपासकों के लिए सही पक्षपात रहित मार्गदर्शन करनेवालों का एक संगठन किया जाए। इसी वजह से उन्होंने भिक्खुओं को सम्पत्ति का संग्रह करने से मना किया। स्वतंत्र चिंतन और स्वतंत्र आचरण करने में सम्पत्ति करने का बुद्ध का दूसरा उद्देश्य यह था कि एक ऐसा समाज स्थापित किया जाए जो जनता की सेवा करने में बिल्कुल स्वतंत्र हो। इसलिए वे चाहते थे कि भिक्खु विवाह न करें।

क्या आज का भिक्खु संघ इन आदर्शो पर चलता है? इसका जवाब जोरदार नाकार में है। वह न तो जनता का मार्गदर्शन करता है और न उसकी सेवा इसलिए भिक्खु संघ अपनी मौजूदा हालत मे बुद्ध धम्म के प्रचार कार्य के बिल्कुल योग्य नहीं है। पहली बात तो यह है कि भिक्खुओं की संख्या भी अत्याधिक है। उनमें से साधु-संन्यासियों जैसी ध्यान-धारना में व्यस्त रहनेवालों की या तो फिजूल वक्त बर्बाद करनेवालों की संख्या भी बहुत भारी है। उनमें न तो विद्वत्ता है, न ही तो हर कोई रामकृष्ण मिशन को ही याद करता है। बौद्ध संघ को कोई याद नहीं करता।

शेष अगले अंक में...

समाज में मूलभूत परिवर्तन लाना अर्थात सामाजिक, आर्थिक स्तर में मूलभूत परिवर्तन लाना ही सच्चे अर्थो में लोकतंत्र स्थापित करना है–मा.सिद्वार्थ श्रृंगारे, महाराष्ट्र।

अमृतसर/पंजाब–

आपने कहा कि पूरी दुनिया में बहुत प्रकार के इंडेक्स बनाये जाते हैं। जैसे कि भुखमरी के इंडेक्स हैं, प्रगति के इंडेक्स हैं। इसी तरह से और भी कई प्रकार के इन्डेक्स बनाये जाते हैं। इसमें भुखमरी का जो इंडेक्स तैयार हुआ है, उसमें भारत का स्थान पूरी दुनिया में बहुत ही निचले स्तर का है।

उन्होंने कहा कि सन् १९४७ में भारत से अंग्रेजों के जाने के बाद इस देश की राजसत्ता ब्राह्मणों के हाथों में जाने के कारण भारत की यह स्थिति पैदा हुई है। क्योंकि ब्राह्मणों ने जो आर्थिक नीति और विदेश नीति बनाई, वह इस देश में असमानता को मजबूत करने के लिए ही बनायी।

उन्होंने कहा कि बाबासाहब अम्बेडकर सन् १९५१ में कानून मंत्री के पद से इस्तीफा दिया तो उसमें चार बातें महत्वपूर्ण थीं। उसमें एक बात यह थी कि, पंडित नेहरू की जो विदेश नीति थी, वह बेहद घटिया नीति थी। दूसरी जो बात थी वह यह थी कि भारत के योजना आयोग की जिम्मेदारी बाबासाहब अम्बेडकर को देने वाले थे, किन्तु योजना आयोग की जिम्मेदारी बाबासाहब अम्बेडकर को न देकर किसी और को दे दिया। वैसे, बाबासाहब के इस्तीफा देने के चार कारण थे, लेकिन आज के इस विषय से संबंधित दो कारण हैं, जिसमें एक आर्थिक नीति और दूसरा विदेश नीति।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद पूरी दुनिया दो गुटों में बट गयी। एक रशिया का गुट और दूसरा अमेरिका का गुट। उसी दौरान भारत आजाद हुआ था। भारत के ब्राह्मणों ने या जवाहर लाल नेहरू ने सोचा, 'हम न तो रशिया के गुट में जायेंगे और न ही अमेरिका के गुट में शामिल होंगे।' लेकिन बाबासाहब अम्बेडकर का कहना था कि हमें किसी न किसी गुट में शामिल होना चाहिए। यहाँ बाबासाहब अम्बेडकर की विदेशनीति को समझना बहुत जरूरी है। बाद में बाबासाहब अम्बेडकर अमेरिका के कोलंबिया विश्वविद्यालय गए और वहाँ से उनको एलएलडी (डॉक्टर ऑफ लॉ एण्ड लेटर) की मानद उपाधि प्रदान की गयी। बाबासाहब अम्बेडकर भारत में एक राजनीतिक पार्टी का निर्माण करना चाहते थे और उस पार्टी का नाम 'रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया' रखना चाहते थे। क्योंकि सन् १९५२ में अमेरिका में चुनाव हुए थे, उस समय अमेरिका में जो पार्टी सत्ता में आयी थी, उस पार्टी का नाम 'रिपब्लिकन पार्टी ऑफ अमेरिका' था, जो चार साल तक सत्ता में रहने वाली थी। इस तरह हमलोग बाबा. साहब के विदेश नीति को आसानी से समझ सकते हैं।

दूसरी बात यह है कि रशिया के बारे में बाबासाहब अम्बेडकर ने बहुत ही सटीक बात कहा कि, 'कम्युनिज्म द्वि–अग्नि की तरह है, यह हमलोगों को जला डालेगा।' इसका मतलब यह है कि रशिया कम्युनिस्ट देश है और रशिया सभी कम्युनिस्ट देशों को एक कर रहा था और बाबासाहब अम्बेडकर रशिया के गुट में नहीं जाना चाहते थे। इसका अर्थ यह है कि कम्युनिस्टों की जो आर्थिक नीतियाँ हैं, बाबासाहब अम्बेडकर उनसे असहमत थे। इन बातों को हमें ठीक से समझने की आवश्यकता है। क्योंकि बाबासाहब अम्बेडकर भारत में लोकतंत्र स्थापित करना चाहते थे, जबकि जितने भी कम्युनिष्ट देश थे, वहाँ लोकतंत्र नहीं था। उस समय तीन प्रकार की राजसत्ता थी, एक राज परिवार की सत्ता, दूसरा लोकतंत्र और तीसरा कम्युनिष्ट। बाबासाहब अम्बेडकर राजशाही और कम्युनिष्टशाही के खिलाफ थे, किन्तु लोकशाही के पक्ष में थे। उन्होंने आगे कहा कि लोकतंत्र के संबंध में बाबा. साहब अम्बेडकर की खुद की एक व्याख्या है। जब बाबासाहब को पूना के लॉ कॉलेज में बुलाया गया तो उन्होंने लोकतंत्र के संबंध में कहा कि, ''समाज में मूलभूत परिवर्तन लाना अर्थात समाज में बिना रक्त बहाये सामाजिक और आर्थिक स्तर में मूलभूत परिवर्तन लाना ही सच्चे अर्थों में लोकतंत्र स्थापित करना है।'' इसका मतलब है कि बाबासाहब रक्तरंजित क्रान्ति के खिलाफ थे और बिना किसी हिंसा के सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र कायम करने के पक्षधर थे। इस प्रकार हम अच्छी तरह समझ सकते हैं कि बाबासाहब अम्बेडकर की अर्थ नीति और विदेश नीति ब्राह्मणों की अर्थ नीति और विदेश नीति से बिल्कुल अलग थी।

ब्राह्मणों की जो निगुर्ट (अमेरिकी गुट और रशियन गुट से अलग–अलग) आर्थिक नीति रही, उसको उन्होंने सन् १९९० तक जारी रखा और फिर १९९० के बाद उन्होंने कहा कि अब हम अपनी आर्थिक नीति में बदलाव करके दूसरी आर्थिक नीति लाना चाहते हैं और उन्होंने उसका नाम 'नई आर्थिक नीति' रखा। सन् १९९० के बाद ब्राह्मणों ने जो 'नई आर्थिक नीति' लागू की उसमें 'उदारीकरण, निजीकरण और भूमण्डलीकरण की नीति सबसे प्रमुख और महत्वपूर्ण है। नई आर्थिक नीति के तहत 'एलपीजी' की नीति लागू करते हुए ब्राह्मणों ने कहा कि देश की आर्थिक विकास तीव्रगति से हो, इसके लिए हम 'एलपीजी' की नीति लागू कर रहे हैं। देश की जनता को गुमराह करने के लिए ब्राह्मणों ने प्रचार किया कि 'नई आर्थिक नीति' के तहत 'एलपीजी' लागू होने से जनता के आर्थिक स्तर में वृद्धि होगी और देश की जनता का जीवन स्तर ऊँचा होगा।

अब उन्होंने 'एलपीजी' का दूसरा चरण 'सेज' (स्पेशल इकोनॉमिक जोन अर्थात विशेष आर्थिक परिक्षेत्र) लागू कर दिया है। 'सेज' को २००५ से पूरे देश में लागू कर दिया गया है। जब 'सेज' नाम का कानून बनाया गया तो संसद में बिना किसी चर्चा और डिबेट के ही यह कानून पास कर दिया गया। 'सेज' का कानून पास करते समय भी, उन्होंने यही कहा कि हम देश के किसानों का और देश का विकास करना चाहते हैं। अभी हाल में प्रकाशित विकास के आँकड़ों से पता चलता है कि इन ब्राह्मणवादियों ने कितना विकास किया है? ताजा आँकड़ों में इनके विकास का पता चलता है कि दुनिया के ११९ देशों की सूची में भारत का भुखमरी में १००वाँ स्थान है। इससे पता चलता है कि इन ब्राह्मणों ने भारत के मूलनिवासियों को भूख से मारने का प्लान बनाया और भारत में भुखमरी का विकास किया। विश्व के ११९ देशों की सूची में भारत का स्थान १००वाँ है। इसका मतलब यह है कि ब्राह्मणों ने जो विकास की पॉ. लिसी बनाई है, यह कोई देश के विकास की पॉलिसी नहीं है बल्कि भारत के मूलनिवासी बहुजन समाज के विनाश की पॉलिसी है।

आगे कहा कि इसके पूर्व सन् २००७ में अर्जुन सेनगुप्ता की रिपोर्ट आई थी। उस रिपोर्ट में यह बताया गया कि भारत प्रतिव्यक्ति प्रतिदिन की आय के मामले में सर्वाधिक घटिया स्तर पर पहुँच गया है। प्रतिव्यक्ति की प्रतिदिन की आय ६ रूपये से लेकर २० रूपये तक है। ऐसे लोगों की संख्या लगभग ८० करोड़ है, जिनकी प्रतिदिन की आय ६ रूपये, १२ रूपये और २० रूपये है। आज आप देखिए, २० रूपये में ठीक से नास्ता भी नहीं हो पाता है। यदि २० रूपये में हमलोग नास्ता नहीं कर सकते हैं तो दो टाईम का खाना कैसे खाया जा सकता है? इसका मतलब है कि भारत के लगभग ८० करोड़ लोग २४ घण्टे में एक ही बार खाना खाते हैं। उनको दूसरे टाईम का खाना नहीं मिल पाता है और उनको भूखे पेट ही रहना पड़ता है। अर्थात भारत के लगभग ८० करोड़ लोग भयंकर भुखमरी के शिकार हैं। १० वर्ष पहले जब कांग्रेस की सरकार थी, तब का यह रिपोर्ट है कि ८० करोड़ लोग भूखे पेट ही जिन्दा हैं, क्योंकि उन्हें दोनों टाईम का पेटभर खाना नहीं मिलता है। जबकि आज यह वर्तमान आँकड़ा हमारे सामने है कि हमारा देश भुखमरी के इंडेक्स में कितना आगे गया है?

भारत दुनिया के ११९ देशों की सूची में १००वें नम्बर पर है। इसका अर्थ यह है कि २००७ से बदतर हालत अब आई है। ब्राह्मण हर समय यही सोचते और प्लान बनाते हैं कि भारत के मूलनिवासियों को कैसे मारा जाए? इसके लिए वे लोग प्लान बनाकर आदिवासियों को नक्सली कहकर मार रहे हैं। मुसलमानों को आतंकवादी कहकर मारते हैं। कहीं अनुसूचित जाति और अन्य पिछड़े वर्गों में झगड़ा लगाकर आपस में मरवा रहे हैं। हिन्दू और मुसलमान के नाम पर मूलनिवासियों को ही आपस में लड़ाकर मार रहे हैं। इसके अलावा हमें मारने के लिए ब्राह्मणों ने सोचा कि थोड़ा अलग प्लान बनाते हैं कि इनको (मूलनिवासियों को) मारने के लिए हाथ भी न लगाना पड़े। इसलिए उन्होंने योजना बनाया कि इन मूलनिवासियों को खाना ही नहीं मिलना चाहिए। क्योंकि जब खाना ही नहीं मिलेगा तो भूख से वैसे ही तड़पकर मर जायेंगे और मारने के लिए हाथ भी लगाने की जरूरत नहीं पड़ेगी और ये (मूलनिवासी) लोग आरोप भी नहीं लगायेंगे कि हमने (ब्राह्मणों ने) इनको मारा। इस प्रकार इन ब्राह्मणों ने हमलोगों को भूख से मारने का षड्यंत्रकारी प्लान बनाया हुआ है और आज सैकड़ों मूलनिवासी प्रतिदिन भुखमरी का शिकार होकर मर रहे हैं।

अब महत्वपूर्ण बात यह है कि ये (ब्राह्मण) लोग हमलोगों को क्यों मारना चाहते हैं? क्योंकि हमलोग ब्राह्मणों के नस्ल के नहीं हैं। ब्राह्मणों का डीएनए अलग है और हमारा डीएनए अलग है। ये लोग हमारे देश पर सिर्फ राज करना चाहते हैं। ब्राह्मण किस प्रकार राज करना चाहते हैं? आज जिस तरह से ब्राह्मणों ने भारत में राजनीतिक सिस्टम बनाया है कि हमारे वोट के प्रभाव को समाप्त करके ईवीएम के माध्यम से सरकारें बना रहे हैं और क्षेत्र में जाकर भा. जपा और कांग्रेस के लोग पैसे बाँटते हैं। इस प्रकार भाजपा और कांग्रेस की लोकतंत्र के नाम पर नौटंकी चलती है और हमारे मूलनिवासियों को लगता है कि हमलोग लोकतांत्रिक भारत में जी रहे हैं। क्योंकि हर पाँच साल में जो चुनावी नाटक होता है, उसी को देखकर हमारे लोगों को लगता है कि भारत में लोकतंत्र है।

प्रेषक,
''बहुजनों का बहुजन भारत''
(हिन्दी साप्ताहिक)
4765/46(तीसरी मंजिल) रैगरपुरा,
करोलबाग नई दिल्ली–110005
दूरभाषः 011–64592625

प्रति,

TUESDAY/WEDNESDAY
RNI. No. DELHI N/2000/2450
POSTAL REGD. No. DL (C) -14/1129/2018 -20
LINCENSED TO POST WITHOUT PRE PAYMENT
REGD. No. U (C) - 258/2018-2020
POSTAGE AT SRT NAGAR, NEW DELHI

केन्द्रीय कार्यालय : 4765/46, रैगरपूरा, करोलबाग, नई दिल्ली–110005 दूरभाष–011–64592625

Reg.: S-17809

बामसेफ एवं राष्ट्रीय किसान मोर्चा

वर्ष -2018 के राष्ट्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत मूलनिवासी किसान मोर्चा एवं पिछड़ा वर्ग जागृति महासम्मेलन अन्तर्गत...

स्थल- नानाराव पार्क, फुलबाग कानपुर नगर (उत्तर प्रदेश) दिनांक- 01 अप्रैल,2018 दिन- रविवार।

समय–11 बजे से सायं 05 बजे तक।

उद्घाटक - मा.राम सुरेश वर्मा (राष्ट्रीय प्रभारी, राष्ट्रीय किसान मोर्चा,नई दिल्ली।
मुख्य अतिथि–मा.एल.बी.पटेल (राष्ट्रीय अध्यक्ष, कुर्मी क्षत्रिय महासभा)

विशिष्ठ अतिथि–मा.विकाश पटेल (प्रदेश प्रभारी, बामसेफ) **मा.हरीशचंद्र वर्मा** (प्रदेश अध्यक्ष राष्ट्रीय किसान मोर्चा), **मा.किरण चौधरी** (प्रधान महासचिव, बहुजन मुक्ति पार्टी), **मा.रामपाल प्रजापति** (प्रदेश अध्यक्ष अखिल भारतीय प्रजापति महासभा), **मा.बैकुण्ठ नाथ यादव** (प्रदेश अध्यक्ष जनता दल सेकुलर), **मा.गंगा प्रसाद लोधी** (प्रदेश उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय किसान मोर्चा उ.प्र.), **मा.सुदामा प्रसाद अकेला** (सम्पादक कुर्मी क्षत्रिय महासभा), **मा.राम स्वरूप यादव** (जिला प्रभारी भारतीय किसान यूनियन महोबा), **मा.रामसिंह पटेल** (जिला अध्यक्ष, भारतीय किसान यूनियन चित्रकूट), **मा.ओमकार नाथ कुशवाहा** (जिला अध्यक्ष, भारत मुक्ति मोर्चा, कानपुर देहात), **मा.मुकेश सविता** (सामाजिक कार्यकर्ता, इटावा), **डा.शैलेन्द्र प्रसाद यादव** (जिला अध्यक्ष, भारतीय किसान यूनियन उन्नाव), **मा.मौलाना हम्माद अनवर** (मंडल प्रभारी, राष्ट्रीय मुस्लिम मोर्चा, कानपुर मंडल), **मा.रघुनाथ संखवार** (सेवानिवृत बैंक अधिकारी), **मा.रियाज अंसारी** (प्रदेश उपाध्यक्ष ऑल इंडिया पसमंदा मुस्लिम महाज)

विषय

1. ईव्हीएम द्वारा घोटाला करके चुनाव जीतने से लोकतंत्र की हत्या होने के कारण किसानों की आत्म–हत्या का सिलसिला अब उनके बेटे–बेटियों तक पहुँच गया है। एक आंकलन।
2. मूलनिवासी किसानों को राष्ट्रीय स्तर पर संगठित किये बगैर उसके द्वारा उत्पादित फसलों का उचित मूल्य ना मिलना तथा उनकी अन्य समस्याओं का समाधान संभव नहीं हैं। एक बहस

अध्यक्षता- वामन मेश्राम (राष्ट्रीय अध्यक्ष, बामसेफ)

''बहुजनों का बहुजन भारत'' के इस अंक में प्रकाशित होनेवाले लेखकों के विचारों से संपादक सहमत है, ऐसा नहीं है।

बहुजनों का बहुजन भारत, हिन्दी साप्ताहिक मुद्रक, मालिक, प्रकाशित तथा संपादक-वामन चिंधूजी मेश्राम द्वारा वैदिक मुद्रणालय, 3957 गली अहीरान पहाड़ी धीरज, दिल्ली-10006 यहाँ मुद्रित कर म.नं० 4765/46(तीसरी मंजिल) रैगरपुरा, करोलबाग, नई दिल्ली-05 से प्रकाशित।